

Mr. M S Krishna Murthy

former Sr Investigator (EPS)

21.1.1998

Out of all the research studies I was associated with, the base line survey at Tumkur was most interesting because it yielded so much information about a district which could be used in the NTP. I consider the longitudinal survey the most difficult. To repeat the same activities in the same area and get high coverages throughout is not easy.

The most influential scientists I interacted with were Drs Raj Narain and Nagpaul. Raj Narain was a great administrator, a tremendous organiser and extremely practical. He had a tremendous ability to obtain sensitive data. Dr Nagpaul was great in a different way. He was a strict disciplinarian, dedicated and an inimitable teacher. One day, I was with Mr Rama Rao, his PA. He showed me a typed script he had just completed and said in a voice filled with wonder: "Krishnamurthy, this is to be sent for publication, you know; Nagpaul dictated it in one go. After I typed a draft, I showed it to him. He made only two or three corrections that is all".

I had also worked for the Chingleput BCG trial. Dr Raj Narain was its Project Director. It was running with PL480 funds for some time. Suddenly, funds stopped. There was no money even to pay salaries. The trial was in the intake stage. Dr Raj Narain tried every source but the bureaucracy did not understand the implication of closure at this stage. So, Dr Raj Narain used WHO dollars meant for special purposes and kept the project going. He was hauled up in Delhi. Dr Raj Narain gave the secretary appropriate reasons for taking this arbitrary decision. The Secretary was convinced. The trial was resurrected. ICMR was asked to take it over. When Raj Narain talked, everyone listened. His eyes would literally light up.

As to significant changes in my work attitude, I would say it came from the WHO and other international staff. They showed how important work is for science and for people. They inspired us to work hard.

श्री.एम.एस. कृष्णामूर्ति

भूतपूर्व वरिष्ठ अन्वेषक

२१.१.१९९८

सभी खोज पूर्ण अध्ययनों में जिनसे मैं सम्बन्धित था उनमें तुमकूर का सर्वेक्षण बहुत ही दिलचस्प था क्योंकि इससे एक जनपद के बारे में इतनी सूचनाएँ मिली जो राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम में प्रयोग की जा सकती हैं । मैं सोचता हूँ कि लोंगीट्यूडनल अध्ययन सबसे कठिन है । उनकी तुलना के लिये उसी क्षेत्र में व्यापक कार्य करना आसान नहीं है ।

सबसे प्रभावशाली वैज्ञानिक डा. राजनारायन और डा. नागपाल थे जिनसे मेरा सामना हुआ। डा. राजनारायन एक महान प्रशासक, अद्वितीय आयोजक तथा यथार्थवादी व्यक्ति थे । वह दूरदर्शी थे । डा. नागपाल एक अनुशासनप्रिय प्रशासक, समर्पित तथा उत्तम अध्यापक थे । एक दिन, मैं उनके व्यक्तिगत सहायक श्री. रामराव के साथ था जिसने एक टंकण की हुई लिपि दिखायी । वह आश्चर्य से बोले कृष्णामूर्ति यह प्रकाशन के लिए जानी है । डा. नागपाल ने डिक्टेशन दी थी बाद में मैंने इसे टाइप किया और दिखाया । उन्होंने मात्र २ या ३ सुधार किए और कहा शेष सब ठीक है ।

मैं बी.सी.जी. चिंगिलपट्ट ट्रायल में भी कार्य किया । यह पी.एल. ४८० अनुदान से चल रहा था । अचानक अनुदान मिलना बन्द हो गया और वेतन के लिए भी धन नहीं रहा, ट्रायल समापन की ओर अग्रसर था । डा. राजनारायन ने प्रत्येक स्रोत से प्रयास किया परन्तु प्रशासकों को परियोजना बन्द होने से उत्पन्न होने वाले नुकसान के बारे में समझ नहीं आया । डा. राजनारायन ने परियोजना के महत्व को समझते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन से प्रदत्त डालर जो विशेष कार्य के लिए थे, की सहायता से परियोजना को गतिशील रखा । इसके लिए उन्हें दिल्ली में सम्मन किया गया क्यों कि उन्होंने सरकार की आज्ञा के बिना प्रदत्त डालर का उपयोग वेतन देने में प्रयोग किया था । वे दिल्ली जाकर सचिव से मिले और सारी वस्तु स्थिती से अवगत कराया , परिणाम स्वरूप सचिव सहमत हो गए और परियोजना पुर्नजीवित हो गयी । इसे भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद कोष से चलाने को कहा गया मेरे कार्य करने के ढंग में जो बदलाव आया है वह विश्व स्वास्थ्य संगठन व अन्य अर्न्त राष्ट्रीय स्टाफ्स की साईंस और जनहित के लिये लगन से कार्य करना कितना महत्वपूर्ण है उनका संदेश था हम सबके लिये ।

जब डा. राजनारायन बोलते थे, तब सभी सुनते थे, बोलते समय उनकी आँखें ओजस्वी हो उठती थी ।